International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 22-01-2019; Accepted: 25-02-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 87-89

चित्रकूट धाम : धार्मिक आस्था एवं पर्यटन का भौगोलिक अध्ययन

डॉ० जितेन्द्र सिंह
सहायक प्राध्यापक (भूगोल), विन्ध्यांचल महाविद्यालय, जिगना, जिला सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
चित्रकूट अंचल में विविध प्राकृतिक भू–दृश्यों की बनावट एवं संरचना अति आकर्षक है। यहाँ के पर्वत, पठार, मैदान, घाटियाँ, कगार भू–दृश्य, सुरम्य प्रपात, झील, नदियाँ, जलाशय एवं वन्य जीव यहाँ के सौन्दर्य को और अधिक निखार रहे हैं। इन आकर्षणों के कारण ही आज चित्रकूट न केवल भारत वर्ष के पर्यटकों को बल्कि विश्व के पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। चित्रकूट धाम में स्थित व धार्मिक स्थान निम्नवत है – कामदगिरि, भरत मंदिर, अक्षय बट, हनुमान धारा, सीता रसोई, यज्ञवेदी, राघव प्रयाग, प्रमोद वन, जानकी कुण्ड, वेदान्ती आश्रम, स्फटिक शिला, सती अनुसुइया आश्रम, भरतकूप, गुप्त गोदावरी आदि है। प्राकृतिक सुषमा एवं सौभ्यता की साकार मूर्ति विन्ध्यांचल पर्वत के सुरम्य अंकस्थल में स्थित चित्रकूट, भारत का एक सुप्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। राजस्व अभिलेखों में चित्रकूट नाम का कोई ग्राम नही है, उत्तर प्रदेश के कुछ ग्राम तथा मध्य प्रदेश के कुछ ग्रामों को मिलाकर जो प्रमुख धार्मिक एवं भौगोलिक महत्व का क्षेत्र बनता है उसे चित्रकूट के नाम से जाना जाता है। यह स्थल अनादिकाल से हिन्दुओं का धार्मिक स्थल रहा है। प्राचीन काल से ही यह भारतीय संस्कृति तथा धर्म की अटूट श्रृंखला से जुड़ा है।

मूल शब्द : चित्रकूट धाम, धार्मिक आस्था, पर्यटन।

प्रस्तावना
श्री दुर्खीभ ने अपनी पुस्तक The elementary forms of religious life में धर्म की प्रकृति, उत्पत्ति के कारण, प्रभाव आदि के विषय में अत्यधिक विस्तृत तथा सूक्ष्म व्याख्या प्रस्तुत की है। अपने धर्म सम्बन्धी सिद्धान्त के द्वारा आपने यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि धर्म सम्पूर्ण रूप से एक सामाजिक तथ्य या सामाजिक घटना है और वह इस अर्थ में कि नैतिक रूप से सामूहिक चेतना का प्रतीक ही धर्म हैं, इस संबंध में श्री दुर्खीम का अंतिम निष्कर्ष यह है कि 'समाज ही वास्तविक देवता है।'[1–2]
मानव समाज में धर्म इतना सार्वभौमिक स्थायी तथा व्यापक है कि इसे व्यापक रूप में समझे बिना समाज को नहीं समझा जा सकता। धर्म मानव जीवन एवं समाज की अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सार्वभौमिक घटना है। प्रत्येक समाज में चाहे वह आदिम हो अथवा सभ्य सरल हो अथवा जटिल, ग्रामीण हो अथवा नगरीय धर्म की अभिव्यक्ति अवश्य पायी जाती है। इतना अवश्य है कि विभिन्न देशों एवं सांस्कृतियों में धर्म का स्वरूप अलग–अलग पाया जाता है। लेकिन प्रत्येक समाज में धर्म किसी न किसी रूप में सामाजिक जीवन में एक महत्वपूर्ण अंग एवं आधार के रूप में कार्य करता है।
'मानवता के सम्पूर्ण इतिहास में मनुष्य को भाग को बनाने तथा बदलने वाली एक महान तथा स्थायी शक्ति के रूप में धर्म का आवेग सदैव प्रत्येक स्थान पर उपस्थित रहा है।'
यदि धर्म ने उन सभी वस्तुओं को जन्म दिया है जो समाज के लिए आवश्यक है तो वह इसलिए कि समाज का विचार ही धर्म है। मनुष्य की उद्वेगनात्मक आवश्यकता का चरम भार वहन न करने के लिए ही धर्मों का निर्माण हुआ है। इस प्रकार सामाजिक जीवन के नैतिक पहलू को मजबूत करके धर्म व्यक्ति को दुख तथा भय से मुक्ति दिलाता है। भारतीय जीवन का मूल आधार धर्म ही है। धर्म को निकालकर भारतीय जीवन की कल्पना आज भी नहीं की जा सकती क्योंकि भारत की 82 प्रतिशत जनसंख्या गांव में निवास करती है और गांव की जनता आज भी धर्म परायण है। भारतीय मान्यता यहीं हैं कि धर्म के बिना जीवन को बनाये रखना ही असम्भव है – 'धर्म एवं हतो दृन्ति धर्मो रक्षितः' अर्थात धर्म का जो नाश करेगा धर्म उसका नाश कर देगा। पर जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है, यह प्राचीनतम सिद्धांत भारतीय जीवन के प्रत्येक पक्ष में प्रत्यक्ष है। इसलिए उपदेश यहीं है कि 'धर्म के अनुसार चलो', परमेश्वर के सम्मुख नम्र रहो, यह दासता भी कल्याणमय है क्योंकि इसी दासता के माध्यम से तुम्हें अपने जीवन में 'परम' (मोक्ष) की प्राप्ति होगी।' भारत में जीवन का धार्मिक आधार इसी से स्पष्ट है।[3–5]
जगत और जीवन का आधार भी धर्म है। भारतीय मान्यता के अनुसार इस विश्व और ब्रहमाण्ड का सृष्टिकर्ता केवल एक ईश्वर है। मनु जी की मान्यता है कि इस जगत की उत्पत्ति का मूल कारण परमात्मा है। उनके अनुसार सृष्टि के आरम्भ होने से पूर्व जगत सम्पूर्ण भू अन्धकारमय था। स्वयं परमात्मा इस स्थिति को सहन न कर सके और उन्होंने अपने पराक्रम से अन्धकार को आलोक में बदला। इस प्रकार यह सम्पूर्ण जड़ तथा चेतन उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा की अभिव्यक्ति है। मनु के अनुसार यह संसार मायामय तथा सारहीन नहीं अपितु मानव जीवन के लिए धर्म तथा कर्मक्षेत्र है। इसी संसार में अपने धर्मानुसार आचरण के द्वारा ही जीवन के परम लक्ष्य अर्थात 'परम सत्य' की ओर बढ़ा जा सकता है।[8]
वेदान्त सूत्र के अनुसार जीव ब्रह्मा का ही अंश है। गीता में भी कहा गया है। 'मर्मवंशो जीवलोके जीवभूतः सनातन' (1517) अर्थात आविर्भाव के पहले जीव ब्रह्म से पृथक होकर शत–सत्रान्त्र जन्म जरा भरण के प्रवाह में असंख्य सुख दुख, पाप पुण्य तथा धर्म ज्ञान से अभिज्ञता प्राप्त कर जीव की जीवन यात्रा एक दिन समाप्त होती है और उस दिन फिर वह परम ब्रह्म में आ मिलता है। इस प्रकार फिर आ मिलने की अवधि मनुष्य द्वारा किये गये धर्म–कर्म पर निर्भर करती है। धर्म के अनुसार कर्म मनुष्य को जीवन मृत्यु के चक्कर से मुक्ति देता है और उसे ईश्वर से एकाकार होने में मदद करता है। इस प्रकार जीवन धर्म से ही आरम्भ होता है और धर्म में ही उसका अन्त होता है।
भारत में जीवन का धार्मिक आधार इस बात से भी स्पष्ट है कि हिन्दू जीवन दर्शन में मनुष्य के अन्तरतम के सार को 'आत्मा' कहा गया है। यह आत्मा, परमात्मा का ही एक अंग है। सम्पूर्ण जगत इस महान विश्व आत्मा ब्रह्म से ही निकलता है और इसी में फिर से विलीन हो जाता है। जैसे नदियां समुद्र में से उत्पन्न

होती है और बाद में उसी में लौटकर व उसी में निकलकर स्वयं समुद्र बन जाती है।[7–9]

उसी प्रकार आत्मा का भी आदि और अन्त दोनों ही परमात्मा है। क्योंकि आत्मा स्वयं परमात्मा का ही एक अभिन्न अंग है। जब उस परमात्मा ने एक से अनेक होने की इच्छा की तभी यह जगत तथा उसके असंख्य जीवों ने उसमें से जन्म लिया। अतः जो परमात्मा हैं वहीं आत्मा और जो आत्मा है वहीं तुम हो। इसलिए गीता के अनुसार यह आत्मा अमर है। केवल शरीर नष्ट हो जाता है, आत्मा तो सदैव बनी रहती है, वह कभी नही मरती। अतः मृत्यु से क्या डर, डर तो एक मात्र भगवान से ही होना चाहिए।

केवल हिन्दुओं का जीवन ही नहीं मुसलमानों का जीवन भी धर्म पर ही आधारित हैं और वह धर्म है इस्लाम। इस्लाम का अर्थ होता है समर्पण अथवा सत्सर्ग, जिसका मतलब होता है उल्लाह (ईश्वर) की इच्छा के सामने झुकना।

उत्सव, पर्व और त्योहार सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग है और इन पर भी हमें धर्म का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। हिन्दू या मुसलमान अथवा सिक्ख के प्रायः सभी पर्व, उत्सव और त्योहार किसी न किसी रूप में धर्म से सम्बोधित है एवं उनमें धार्मिक कृत्यों को ढूढ़ना किसी के लिए भी मुश्किल नही हैं। प्रत्येक त्योहार में किसी न किसी देवी देवता को पूजने का विधान है।

भौगोलिक परिचय

यह आश्रम सतना जिले के मझगवाँ तहसील में स्थित है। चित्रकूट से यह स्थल 12 कि.मी. दक्षिण पूर्व में स्थित है। यह पवित्र स्थल विन्ध्य श्रेणी के तलहटी में एवं मंदाकिनी के तट पर स्थित अत्यन्त रमणीक स्थल है। यह 25°9′ उत्तरी अक्षांश एवं 80°52′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। पुण्य सलिला मंदाकिनी के तट पर स्थित अनुसुइया आश्रम मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश राज्य के लोगों का आस्था का केन्द्र है। यह धार्मिक पर्यटन केन्द्र सतना चित्रकूट मुख्य मार्ग से पूर्व की ओर 5 कि.मी.की दूरी पर स्थित है। यहाँ पहुंचने के लिए पहले कच्चा मार्ग था किन्तु वर्तमान में चित्रकूट विकास प्राधिकरण द्वारा पक्की सड़क का निर्माण कराया गया है। यह स्थल सतना से 70 कि.मी., इलाहाबाद से 132 कि.मी. एवं लखनऊ से 295 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।[1–2]

यहाँ की जलवायु उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी है। वर्ष में यहाँ तीन ऋतुयें होती है। वर्षा ऋतु जुलाई–सितम्बर तक होती है। वर्षा ऋतु में औसत 1250 मि.मी. वर्षा होती है। ग्रीष्म ऋतु मार्च–जून तक होती है। इस ऋतु में तापमान अत्यधिक ऊँचे हो जाते है फिर भी घनें वनों एवं पास में प्रवाहित मंदाकिनी नदी के कारण शीतलता बनी रहती है। शीत ऋतु में कड़ाके की ठण्ड पड़ती है। यह ऋतु नवम्बर–फरवरी तक होती है। इस समय औसत तापमान 12 से 15 डिग्री से.ग्रे. रहता है।[8]

सती अनुसुइया आश्रम के आस–पास का सम्पूर्ण क्षेत्र घने वनों से आच्छादित है। यहाँ के वनों में लगभग 150 प्रकार की प्रजातियों के पेड़–पौधे एवं औषधीय वनस्पतियाँ पायी जाती है। यहाँ के घने वनों में विविध प्रकार के पशु–पक्षी विचरण करते है। बन्दरों का झुण्ड देखने को मिलता है। मंदाकिनी नदी में बड़ी संख्या में मछलियों का आनन्द लिया जा सकता है।

विश्लेषण

भारत में निवास करने वाली अनेक जाति धर्म एवं सम्प्रदाय है, धार्मिक आस्था एवं विश्वास प्रकृति पर आधारित है। प्रकृति में व्याप्त विविधता एवं विभिन्नता के कारण ही प्रकृति का स्वरूप बहुरंगी दिखाई पड़ता है।

धर्म का शाब्दिक अर्थ धारण करना है, अर्थात धर्म वह है जिसमें लोक को धारण किया जाये, दूसरे शब्दों में पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वास एवं आचरण की एक समग्र अवस्था है जो इन पर विश्वास करने वालों को एक नैतिक समुदाय में संयुक्त करती है। तापक्रम, वर्षा, आर्द्रता, नमी, वनस्पति, जीव–जन्तु फसलों की विविधता आदि ने मानव स्वभाव, कार्य करने का ढंग, खान–पान, रहन–सहन के स्तर मानव, अधिवास, व्यापार, उद्यम, रीति–रिवाज, परम्परायें, रूढ़ियों, धार्मिक मान्यतायें प्रभावित हुई है जिसमें सामाजिक आस्था एवं विश्वास टिका हुआ है। पांच भौतिक तत्व छिति, जल, पावक, गगन, समीरा के उल्लेख वेद पुराण उपनिषद धार्मिक ग्रंथ एवं अनेक विधाओं में वर्णित है।

चित्रकूट परिसर महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटन स्थल होने के बावजूद भी यहाँ आमोद प्रमोद तथा सुन्दरता का आकर्षण एवं प्रशन्नचित्त करने का केन्द्र बिन्दु भी है। यहाँ पर पुस्तकालय, क्लब, सार्वजनिक भवन तथा महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय स्थापित हो जाने के कारण एवं यहां की प्राकृतिक भूदृश्यावली, झरने, जल प्रपात, कार्स्टस्थलाकृति, नदी सरिता, जीव–जन्तुओं की विविधता एवं स्फटिक शिला व सती अनुसुइया स्थलों पर स्थित जल में मछलियों का दृश्य अत्यन्त रमणीय है। अतः इन स्थलों में मछलियों के पकड़ने की रोक भी यहां है, जिससे तीर्थ यात्रियों के लिए यह एक आमोद–प्रमोद का केन्द्र स्थल बन गया है।

चित्रकूट विशेष क्षेत्र का 2/3 भाग वन एवं पहाड़ी क्षेत्र है, जो अपने आपमें पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु हैं, यहाँ झूला उत्सव जल बिहार, रथ यात्रा, नौका बिहार, आधुनिक रामायण मेला होता है।[3]

चित्रकूट धाम के प्रमुख धार्मिक केन्द्र

- **गुप्त गोदावरीः** यह स्थल चित्रकूट रामघाट से दक्षिण से सतना राजमार्ग पर 22 कि.मी. की दूरी पर दक्षिण में स्थित है। यहाँ जाने के लिए टैक्सी, बसों, जीपों आदि उपलब्ध है। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता के कारण की गुप्त गोदावरी पर्यटन का प्रसिद्ध केन्द्र है।
- **हनुमान धाराः** यह स्थान मंदाकिनी के किनारे एक पर्वत श्रेणी पर स्थित है। रामघाट से लगभग इस स्थान की दूरी 4 कि. मी. हैं। यहाँ ऊपर जाने के लिए 360 सीढ़ी चढ़ना पढ़ता है। यहाँ हनुमान जी की प्रतिमा के बायें भुजा पर जल की धारा गिरती है। इसी कारण इस स्थान का नाम हनुमान धारा रखा गया है।[3]
- **कामदगिरीः** कामदगिरी एक छोटी सी पहाड़ी हैं जिसकी परिधि 5 कि.मी. के लगभग है। यहाँ कामदगिरी पर्वत, गोवर्धन पर्वत के समान हैं, इसी पर्वत में परिक्रमा भी बनी है। यहाँ तीर्थ यात्री नंगे पैर चलकर परिक्रमा लगाते है।
- **सती अनुसुइयाः** सती अनुसुइया आश्रम रामघाट से दक्षिण की ओर 12 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ जाने के लिए बस, टैक्सी सेवायें उपलब्ध हैं, यह आश्रम अत्यन्त पवित्र है। यहाँ की प्राकृतिक दृश्यावली की सुन्दरता के कारण यहाँ पर्यटक देश विदेश के समय–समय पर भ्रमण करते है।
- **स्फटिक शिलाः** स्फटिक शिला में प्रकृति द्वारा चूने से निर्मित चट्टाने पायी जाती हैं। इन चट्टानों की बनावट अत्यन्त रमणीय है। चट्टानों की सुन्दरता के कारण ही इस स्थान का नाम स्फटिक शिला रखा गया है।
- **भरतकूपः** यह वह स्थान है जहाँ राजा भरत ने देश के सभी पवित्र तीर्थ स्थलों का पवित्र जल लाकर इस कूप में संचित किया था, यह एक छोटा एकान्त स्थल है।
- **मड़फाः** यह स्थान भरतकूप से आठ कि.मी. की दूरी पर माण्डव ऋषि की तप स्थली होने के कारण यहाँ की भूमि अत्यन्त पवित्र है। माण्डव ऋषि आश्रम में व्यागोदक नाम का कुण्ड भी है। वहाँ पर एक विशाल एवं भव्य ताण्डव नृत्य

करती हुई शिव प्रतिमा है। चन्देल काल की दुलर्भ प्रतिमाओं में एक है।[3]

निष्कर्ष

चित्रकूट के अंचल में फैले हुए विभिन्न भुदृश्यों को देखने से इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि चित्रकूट शब्द भौगोलिक दृश्यावली का पर्याय शब्द है। चित्रकूट का नामकरण चित्रः + कूट अर्थात् चित्र का आशय है भौगोलिक दृश्यावली, इसलिए प्रकृति की अगूढ़ दृश्यावली एवं उसकी रचना के कारण इसका नामकरण चित्रकूट पड़ा जो कि समीपवर्ती क्षेत्रों में विद्यमान भौगोलिक दृश्यावली जैसे – गुप्तगोदावरी, अधोभौमिक जल द्वारा निर्मित अश्चुताश्म एवं निश्चुताश्म भूदृश्य जो भारत में अपने आप में अनोखा है। इस क्षेत्र में विद्यमान अनेक पर्वत श्रेणियाँ जैसे – कामदगिरि, लक्ष्मण पहाड़ी, हनुमानधारा आदि अत्यधिक आकर्षक व प्राकृतिक सौन्दर्य से पूर्ण है। यहाँ की तीर्थ स्थल एवं पर्यटन केन्द्र के रूप में विख्यात चित्रकूट विन्ध्यांचल में स्थित एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। चित्रकूट पर्यटन केन्द्र प्राचीन काल से ही लोगों का आस्था का केन्द्र रहा है। इस कारण इस स्थल पर देश–विदेश से लोग आकर नतमस्तक हो जाते है। चित्रकूट धाम का वर्णन हमें प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में भी देखने को मिलता है। महर्षि बाल्मीक रचित रामायण में तो चित्रकूट धाम का बहुत अधिक वर्णन मिलता है। हमारे धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर यह माना जाता है कि भगवान राम वनवास के समय एक लम्बे समय तक इस भूमि को अपनी आश्रय स्थली बनाया था। रामायण के अध्याय 56 में मनोरम चित्रकूट का वर्णन करते हुए श्री राम लक्ष्मण से कहते हैं कि –

चित्रकूट मिमं पश्य प्रवृद्धि शिखर गिरिम्।
समभूमितलें रम्ये द्रमैबर्हुभिराते।।

अर्थात हे लक्ष्मण ऊँची चोटी वाले इस चित्रकूट को देखो, नीचे इस वन की सुन्दर भूमि अनेक पेड़–पौधों से ढकी है।

चित्रकूट धाम में तीर्थ यात्रा के अतिरिक्त तीर्थो की स्थापना में भी अभूतपूर्व नियोजन शैली का उपयोग किया गया था, इसलिए तीर्थो की स्थापना ऐसे स्थानों पर की गई, जहाँ प्राकृतिक विशिष्टता तो हो ही लेकिन कैसी भी भौगोलिक परिस्थिति में वे क्षतिग्रस्त न हो सके। निश्चय ही यह हमारे पूर्वजों की भूगोल की उत्तम जानकारी का परिचायक है।

सन्दर्भ

1. तुलसीदास कृत श्री रामचरित मानस से लिया गया है।
2. द्विवेदी, शारदा : चित्रकूट गौवगाया, त्रिवेणी प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 53–54.
3. नगर पंचायत चित्रकूट के सर्वेक्षण पर आधारित.
4. हरिमोहन : संस्कृति पर्यावरण एवं पर्यटन, शोध पत्र पर्यटन के विविध आयाम पुस्तक में प्रकाशित, पृ. 29.
5. वर्मा, सजंय कुमार : पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद.
6. नेगी, जगमोहन : पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 96.
7. शुक्ला, अनूप कुमार : प्रयाग और उसके परिप्रदेश में तीर्थ यात्रा एवं पर्यटन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा.
8. सिंह, बी.पी. : मध्यप्रदेश में पर्यटन विकासः समस्यायें एवं संभावनायें, शोध परियोजना प्रतिवेदन 2004, यू.जी.सी. मध्य क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल.
9. पटेल, बी.पी. (1989) : सतना जिले के विकास केन्द्र, शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा.